# बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे; लेकिन तीन दरजे आगे । उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे । इस भवन की बुनियाद खूब मजबूत डालनी चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके । एक साल का काम दो साल में करते थे । कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे । बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने !

मैं छोटा था, वह बड़े थे । मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे । उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था । और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे । हरदम किताब खोले बैठे रहते । और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे । कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते । कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते । कभी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य । मसलन एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अभी ना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई, राधेश्याम-श्रीयुक्त राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था । मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा । और उनसे पूछने का साहस न

हुआ । वह नवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में । उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी ।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था । एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था । मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता, और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज की तिल्लियाँ उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या । कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते ! उनका पहला सवाल यह होता- 'कहाँ थे ?' 'हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था । न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि जरा बाहर खेल रहा था । मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें ।

'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी-भर पढ़ते रहोगे और हर्फ न आएगा । अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले; नहीं तो ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते । यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती है और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है । और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है । बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा । और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते । मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है । इतने मेले-तमाशे होते

हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है ? रोज ही क्रिकेट और हॉकी-मैच होते हैं । मैं पास नहीं फटकता । हमेशा पढ़ता रहता हूँ । उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे ? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे । अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है तो बेहतर है; घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो । दादा की गाढ़ी कमाई के रुपए क्यों बरबाद करते हो ?'

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता । जवाब ही क्या था । अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे । 'ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते, कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती । इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता- क्यों न घर चला जाऊँ । जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ । मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत ! मुझे तो चक्कर आ जाता था; लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा । चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता । बिना पहले से नक्शा बनाए, कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ । टाइम-टेबिल में खेल-कूद की मद बिल्कुल उड़ जाती । प्रातःकाल उठना; छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना । छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल । साढ़े तिन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह

तक ग्रामर; आधा घंटा होस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कंपोजिशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम ।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात । पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती । मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की वह उछलकूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेजी और फुरती, मुझे अज्ञा और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सबकुछ भूल जाता । वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती, और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता । मैं उनके साए से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो । उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले । हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती । फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता ।

२

सालाना इम्तहान हुआ । भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया । मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रहा गया । जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ- आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई ? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ । लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का

विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा । हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा । भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा । आजादी से खेलकूद में शरीक होने लगा । दिल मजबूत था । अगर उन्होंने फिर फजीहत की, तो साफ कह दूँगा- आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया । मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया । जुबान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ जाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था । भाई साहब ने इसे भाँप लिया- उनकी सहज-बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे को भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े- देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा । उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया ? या यों ही पढ़ गए ? महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास । जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो । रावण भूमंडल का स्वामी था । ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं । आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है; पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते । संसार में अनेकों राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं । रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे । बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे । काम और पानी के देवता भी उसके दास थे । मगर उसका अंत क्या हुआ ? घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे; पर अभिमान न करे, इतराए नहीं ।

अभिमान किया, और दीन-दुनियाँ दोनों से गया। शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं! अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे से भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए। मेरे फेल होने पर मत जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जोमेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, और इंलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुजरे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह आठवाँ लिखा और सब नंबर गायब! सफाचट। सिफर भी ना मिलेगा, सिफर भी! हो किस खयाल में। दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स! दिमाग चक्कर खाने लगता है। आँधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, चहारुम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता और जोमेट्री तो बस खुदा की पनाह! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अ ब ज और अ ज ब में क्या फर्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो।

दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह । वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है । चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें । और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है । और आखिर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से फायदा ? इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा । पूछिए, इससे प्रयोजन ? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से; लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफात याद करनी पड़ेगी ! कह दिया- 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो । अब आप कापी सामने खोले, कलम हाथ में लिये उसके नाम को रोइए । कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है, इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है; लोकिन इस जरा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें । जो बात एक एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की जरूरत ? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ । यह तो समय की किफायत नहीं; बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया जाए । हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे, अपनी राह ले । मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पड़ेंगे; चाहे जैसे लिखिए । और पन्ने भी पूरे फुलस्केप के आकार के । यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है ? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो । समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो । ठीक ! संक्षेप में तो चार पन्ने हुए नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते । तेज भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी है । उलटी बात है या नहीं ? बालक भी इतनी-सी-बात समझ सकता है; लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज भी नहीं । उस पर

दावा है कि हम अध्यापक हैं । मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा । इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो जमीन पर पाँव नहीं रखते । इसलिए मेरा कहना मानिए । लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज्यादा अनुभव है । जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा ।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती । भोजन आज मुझे नि: स्वाद-सा लग रहा था । जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ । भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया । स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही । खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता । पढ़ता भी; मगर बहुत कम, बस इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में जलील न होना पड़े । अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा ।

३

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फेल हो गए । मैंने बहुत मेहनत नहीं की; पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया । मुझे खुद अचरज हुआ । भाई साहव ने प्राणांतक परिश्रम किया था । कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छह से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले । मुद्रा कांतिहीन हो गई थी; मगर बेचारे फेल हो गए । मुझे उन पर दया आती थी ! नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े

और मैं भी रोने लगा । अपने पास होने की खुशी आधी हो गई ! मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले ।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया । मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला । अखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं । मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से ।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे । कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया । शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम । मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा । मुझे कुछ ऐसी धारण हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ । मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी को ही भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था । माँझा देना, कने बाँधना, पतंग टुरनामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं । मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नजरों में कम हो गया है ।

एक दिन संध्या-समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था । आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन में नए संस्कार ग्रहण करने आ रही हो । बालकों की पूरी सेना लग्गे और झड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी । किसी को उपने आगे-पीछे की खबर न थी । सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, ट्राम, न गाड़ियाँ ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे । उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो; बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो । आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए । एक जमाना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे । मैं कितने ही मिडिलचियों को जानाता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं । कितने ही आठवीं जमातवाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के संपादक हैं । बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं । और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाजारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो । मुझे तुम्हारी इस कमअकली पर दुख होता है । तुम जहीन हो, इसमें शक नहीं लेकिन वह जेहन किस काम का, जो हमारे आत्म-गौरव की हत्या कर डाले । तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाईसाहब से महज एक दरजा नीचे हूँ, और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं है; लेकिन यह तुम्हारी गलती है ।

तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमाअत में आ जाओ- और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ-लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है; उसे तुम क्या; खुदा भी नहीं मिटा सकता । मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा ! मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम. ए. और डी. लिट्. और डी. फिल. ही क्यों न हो जाओ । समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है । हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया, और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गए; लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा । केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं; बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा तजुरबा है और रहेगा । अमेरिका में किस तरह राज -व्यवस्था है, और आँठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, ये बातें चाहे उन्हें न मालूम हों; लेकनि हजारों ऐसी बातें है, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है । दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ -पाँव फूल जाएँगे । दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा; लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों । पहले खुद मरज पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे । बीमारी तो खैर बडी चीज है । हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले । जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते है, और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं । नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह

चुराने लगते है, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे । अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो । एम.ए.हैं कि नहीं; और यहाँ के एम. ए. नहीं, आक्सफोर्ड के । एक हजार रुपए पाए हैं; लेकिन उनके घर का इंतजाम कौन करता है ? उनकी बूढ़ी माँ । हेड़मास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई । पहले खुद घर का इंतजाम करते थे । खर्च पूरा न पड़ता था । करजदार रहते थे । जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है । तो भाई जान, यह गरुर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतंत्र हो । मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे । अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ । मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं ।

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत-मस्तक हो गया । मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई । मैंने सजल आँखों से कहा- हरगिज नहीं । आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है ।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले- मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता । मेरा भी जी ललचता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ ? यह कर्त्तव्य भी तो मेरे सिर है !

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा । उसकी डोर लटक रही थी । लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही । उछलकर उसकी डोर-पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े । मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था !

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| तालीम | - | शिक्षा; |
| पुखता | - | पक्का; |
| पाएदार | - | स्तम्भ; |
| निगरानी | - | देखरेख; |
| अध्ययनशील | - | पढ़ने लिखनेवाला; |
| रौद्ररूप | - | क्रोधी चेहरा; |
| प्राण सूख जाना | - | बहुत डर जाना; |
| कसूर | - | दोष; |
| आलीशान | - | भव्य, महान; |
| बुनियाद | - | नींव; |
| हुक्म | - | आदेश; |
| तम्बीह | - | शिक्षा, चेतावनी; |
| मसलन | - | उदाहरणार्थ, जैसे; |
| हाशिया | - | किनारा; |
| दरअसल | - | सचमुच; |
| इलाज | - | चिकित्सा; |
| लताड़ | - | डाँट; |
| मेहनत | - | परिश्रम; |
| फजीहत | - | बेइज्जती, अपमान; |
| नसीहत | - | सीख; |

टेर - दृष्टि,निगाह;

घुड़की - डाँट, फटकार;

सालाना - वार्षिक;

खुराफात - शैतानी;

इम्तहान - परीक्षा;

जुबान - जीभ;

हेकड़ी - अक्खड़पन;

जाहिर - साफ, खुला;

घमंड - गर्व, अहंकार;

नतीजा - फल, परिणाम;

जमाअत - श्रेणी, कक्षा;

जहीन - बुद्धिमान;

जेहन - बुद्धि, मगज;

महज - केवल, सिर्फ;

बदहवास - हतबुद्धि;

नेकनामी - कीर्त्ति, यश;

इंतजाम - बन्दोवस्त, व्यवस्था;

बेतहासा - लगातर, निरन्तर;

शक - संदेह;

तजुरबा - अनुभव, जानकारी ।

# अनुशीलनी

## १. समझो और लिखो :

(क) लेखक का मन क्यों पढ़ाई में नहीं लगता था ?

(ख) बड़े भाई साहब हर साल क्यों फेल हो जाते थे ?

(ग) छोटे भाई को किन-किन चीजों का शौक था ?

(घ) कक्षा में प्रथम आने पर लेखक क्या सोचते हैं ?

(ङ) बड़े भाई से डाँट खाने पर छोटे भाई के मन में कैसी प्रतिक्रिया होती थी ?

(च) दोनों भाइयों में बडा स्नेह था, यह कैसे पता चलता है ?

## २. यह किसने, किससे और कब कहा ?

(क) मेरे दरजे में आओगे तो दाँतों पसीना आएगा ।

(ख) दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है ।

(ग) ''हरगिज नहीं, आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है ।''

## ३. भाषाबोध :

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो :

तालीम .....

पुख्ता .....

मेहनत .....

खुराफात .....

मसलन .....

जमात .....

बुनियाद .....

निगरानी .....

इम्तहान .....

**४. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो :**

फजिहत, नेकनामि, नतिजा, जाहीर, इम्तीहान, जूबान, आलिशान, बूनियाद

**५. पाठ में युग्म-शब्दों को छाँटकर लिखो :**

जैसे : कभी-कभी, खेल-कूद

.....

.....

.....

.....

क्या तुम ऐसे अन्य-शब्द बना सकते हो ?

**६. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखो :**

आँख -

घंटा -

बात -

हल्का -

समस्या -

**७. निम्नलिखित शब्दों को लगाकर वाक्य बनाओ :**

निपुण -

आराम -

आजकल -

अभिप्राय -

आसान -

सफल -

❖ ❖ ❖

**सन्धि : यब दो शब्द एक-दूसरे के निकट आते हैं, तब पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि मिल जाती हैं । इस प्रकार मिलने से जो विकार या परिवर्त्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं ।**

हिन्दी में तीन प्रकार की सन्धियों का प्रयोग होता है -

(क) स्वर सन्धि

(ख) व्यंजन सन्धि

(ग) विसर्ग सन्धि

इनके बारे में व्याकरण की पुस्तक से जानकारी प्राप्त करो ।